International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 02-04-2023, Accepted: 17-04-2023, Published: 02-05-2023
Volume 9, Issue 3, 2023, Page No. 1-2

कविवर राम नरेश पाठक के साहित्य में लोक चेतना

शशांकधर शेखर[1], डॉ आनंद कुमार सिंह[2]
[1] शोधार्थी, हिंदी विभाग, मगध विश्वविद्यालय बोधगया, बिहार, भारत
[2] एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गया कॉलेज, मगध विश्वविद्यालय बोधगया, बिहार, भारत

सारांश
समकालीन हिन्दी साहित्य में लोक वेतना विषय से जुड़कर कुछ मुद्दे साहित्यकार और आस्वादकों के सामने एक चुनौती के रूप में उभर कर आते हैं। विज्ञान और तकनीकी के युग में क्या यह चेतना नष्टप्राय होती जा रही है? क्या वह धारा आज चुनौतियों का सामना कर रही है? क्या वह एक पूरक तत्व या विरोधी? क्या विश्वग्राम का वैश्विक पहलू हमारी लोकवेतना को झकझोर कर डालेगी या साथ लेकर चलेगी? क्या आज के युग में साहित्य की लोकचेतना केवल संग्रहालय की चीज बनकर रह गई है? क्या वह आस्था और जीवनमूल्य का अटूट हिस्सा है ? साहित्यकार उसको बिकाऊ चीज के रूप में मानते हैं या टिकाऊ? केवल दिमागी कसरत के रूप में लोकचेतना को साहित्य में जगह देती है तो उसमें ऊर्जा और उन्मेष की गुंजाइश न रहेगी।

मूल शब्दः लोकचेतना, आस्था, अन्योनाश्रित, आंचलिक, मार्मिकता, विश्वग्राम, जीवनमूल्य, अनुभूति श्रीवृद्धि, वेदना, श्रमिक कृषक, लोकतत्व

मूल आलेख

राम नरेश पाठक बिहार के औरंगाबाद जिले के केताकी गाँव में पैदा हुए जोकि जंगलों पहाड़ों से चौतरफा घिरा हुआ है स गाँव में प्रायः सभी जाति के लोग आपस में परस्पर सह–अस्तित्व के भावना के साथ रहते हैं स काम बंटा हुआ है लुहार खेती के औजार बनाते हैं बढई हल बनाता है, कुम्हार चाक चलाता है, माली फूल माला का कारोबार करता है स कहने का तात्पर्य कि पाठक जी एक श्रमजीवी समाज में रहे उनके बीच पले बढे और रचनाकर्म में प्रवृत हुए स उनके कविताओं में श्रमिक समाज बड़े ही मौलिक स्वरुप में आया है।

पाठक जी हिंदी और मगही में सामान अधिकार से रचना करते हैं स हिंदी नवगीत आन्दोलन में पाठक जी का योगदान महत्वपूर्ण है स सगुन शीर्षक मगही कविता में कवि प्रायः श्रमजीवी समाज के सभी वर्गों को छूते हुए उनके परस्पर साहचर्य एवं अन्योन्याश्रित संबंधों एवं कृषक समाज के ग्राम्य संस्कृति का बड़ा ही सुन्दर प्रस्तुति करता है।

"सगुन हो रहल हे सगरो गाँवें–गाँव
ऐन अक्षय तिरतिआ के
सगुन हो रहल हे .....
सगुन हो रहल हे पंडित जी के अंगना में
हरचरन बढ़ही के दूरा पर
संधीर मिसतिरी के घन आउ भांथी भिजुन
.....पुनीत कुम्हार के चाक तर"

कविता में श्रमजीवी लोक का बड़ा ही मौलिक वर्णन है। भारत की ग्रामीण संस्कृति में विभिन्न श्रमिक समाज का, कृषक संस्कृति के सगुन अर्थात शुभारम्भ की बात करते कवि समाज के अन्योन्याश्रित संबंधो को कविता का स्वर देता है। इस शोध प्रबंध में पाठक जी के हिंदी और हिंदी की क्षेत्रीय बोली मगही में की गयी रचनाओं में लोक की पीड़ा लोक का दर्द उसकी टीस और कसक का अन्वेषण करेंगे स वास्तव में कवि की रचना उतनी ही सार्थक होती है जितना कि लोकतत्व उसमें मूर्तिमान होता है।

पंडित रामनरेश पाठक के कविताओं में लोकचेतना

डॉ. संपत्ति अर्याणी कहती हैं "मगही काव्य का गायन करते, तब श्रोता विभोर हो उठते। आज सब कुछ चित्रवत् नेत्रों के सम्मुख दिखाई पड़ रहा है। सहसा विश्वास नहीं होता कि अब वे हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन सच को तो स्वीकारना पड़ेगा। उपवन में पुष्प खिलते हैं। कुछ काल तक अपना सौंदर्य और सुरभि बिखेरते हैं। फि अपना अस्तित्व खोकर मिट्टी में मिल जाते हैं। कुशल कारीगर इन पुष्पों से इत्र निकाल कर, उन्हें अमरता प्रदान करते हैं। कवि साहित्यकार का व्यक्तित्व भी ऐसा ही होता है। कभी पाठक जी की काव्य प्रतिभा ने मगही उपवन की श्रीवृद्धि की थी। कालचक्र से कौन बचा है–, "आया है सो जायेगा, राजा, रंक, फकीर एक सिंहासन चढ़ि चले, एक बंधा जंजीर"। जन–जन के मन को उत्फुल्ल करके, उनके हृदय सिंहासन पर आरूढ़ होकर अपनी भूमिका अदा करके वे चले गये। परन्तु उनका काव्य धरोहर सुरभि बनकर विराजमान है। उनकी पंक्ति

"एक पइसा के हरदीऽ, बुन्नी बरसऽ जलदीऽ।"

अकाल पीड़ित, वर्षा के लिए लालायित जन के लिए आह्वान गीत बन कर सदा गूँजती रहेगी। एक दूसरी कविता की पंक्तियाँ बरबस स्मृति पटल पर कौंध रही हैं।

साँझ, जोग बाना
तोहर अँगना में जोग गवा हे
अंगना में बाना
.....
तू चन्तन से पहोरल हे
तोर बारी ने उड़हुल फुला हे
हम शंख अइसन निरमल ही
हम्पर बारी ने केवड़ा फुला हे।

मगह के घर–घर की वैवाहिक परम्परा की झाँकी देने वाली, मुक्त छन्द में लिखी, यह अलंकार रस और व्यंजना से लदी कविता प्रेम, आनन्द और उत्साह की कमनीय झाँकी देती है। भाषा में आँचलिकता लोक–जीवन का रंग आदि इसमें लालित्य, सरसता और अनुभूति की तीव्रता का संचार कर रहे हैं।[1]

बिहार के कृषि प्रधान अभावग्रस्त किसान जिसकी खेती प्रायः सरकारी नलकूपों नहरों के आभाव में वर्षाजल पर निर्भर है प्रायः कृषकों को प्रकृति धोखा देती है और उन्हें अकाल का सामना करना पड़ता है। नागार्जुन हिंदी कविता में "अकाल और उसके बाद"

कई दिनों तक चूल्हा रोया
चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया
सोयी उसके पास
कई दिनों लगी भीत पर
छिपकलियों कि भी गस्त
कई दिनों तक चूहों कि भी झलत रही शिकस्त

में जिस मार्मिकता से आंचलिक समाज में व्याप्त अकाल की व्यथा को लिखते हैं ठीक उसी व्यथा से पाठक जी मगही में काव्य सर्जना करते हैं स छोल मुआर

कंपसल कदम जूड़ी छैयाँ हो भइया
छोलS मुआर
रनिआ हम्मर भेल भिखइनिऑ हो भइया
छोलS मुआर
गोबर से लीपल अगनवाँ ताकइ
लुहवर अगहनवाँ के राह
टूटल बंड़ेरी से ओठघल खपड़वा
लेहइ कोठिलवा थाह
बाकी भेल झावर पुरइनिया हो भइया.
..छोलS मुआर

साहित्य की सर्जना मानवीय वेदनाओं के गीतों में प्रकटीकरण से आरम्भ होता है स यह लोक की वेदनाओं को समेटे आदिम राग है जिसने मानवीय सभ्यता को उसके कठिन समय से बाहर निकालकर बर्बर युग से लोकतंत्र तक का सफ़र तय कराया है स आज भी आप ग्रामीण परिवेश में सोहर (नए बच्चे के आगमन पर), विवाह गीत,जतसर ग्रामीण परिवेश में चक्की चलते हुए महिलाओं के द्वारा गाया जाने वाला गीत, रोपनी (धान की रोपनी के समय गया जाने वाला गीत) स साहित्य के अन्दर का वही आदिम राग लोक चेतना है लिहाज़ा साहित्य की लोकचेतना उतनी प्राचीन है जितना आदि मानव सभ्यता। उसका रागात्मक पक्ष उसे मुख्य बनाता है। ग्रामीणों के पर्व, त्योहार, आचार–विचार, रिश्ते, जीवनमूल्य आदि को उन्हीं की बोली में अभिव्यक्ति मिलती है। उनके भाव और भाषा में अपनी मिट्टी की सुगन्ध आती है। उसमें मन की जड़ता को दूर करने की अपूर्व क्षमता होती है। वह बौद्धिक वजन का साहित्य नहीं है। वह मौखिक और जीवंत परंपरा का हिस्सा है। वह, असल में एक व्यक्ति की भावाभिव्यक्ति नहीं है, वरन् लोक की सुख–दुःख, वेदना संघर्षों की भावाभिव्यक्ति है। वह समाज की धरोहर हैं। पूराने समाज की घड़कन और स्पन्दन उसको सप्राण बनाती हैं। सामाजिक–पारिवारिक मूल्य ही उसकी जैव खाद है। लोक साहित्य मानवीय रिश्तों को मधुर बनाता है। भोले–भाले आदमियों के अरमानों को मजबूत बनाता है। 'बहुजन सुखाय बहुजन हिताय' के लक्ष्य की पूर्ति करता है। तुलसी दास की उक्ति 'गावहि मंजुल बानी, सुनि कलरव मंगल बानी' में उसका सन्देश निहित है।[2]

पाठक जी की हिंदी कविताओं में भी एक बेबस लाचार मानव जिसके भूत एवं भविष्य खतरे में हैं जिसे नींद नहीं आती जिसे अपनी बेबसी पर अपनी कमजोरियों पर कोफ़्त है ऐसे निम्नवर्गीय श्रमिक कृषक परिवार की वेदना देख सकते हैं स वस्तुतः पाठक जी जी जिस परिवार से जुड़े थे उस परिवार के आजीविका का मुख्य स्रोत पौरोहित्य कर्म तथा कृषि ही था स कृषि आधारित ग्रामीण व्यवस्था से कवि का जीवन गहरे जुड़ा था उसका कृषक समाज की पीड़ा से प्रभावित होना स्वाभाविक है।

मेरे गौशाले के खूँटों पर/दम तोड़ते
तीन जोड़ी बैलों की आँखों की गहराई में
रुका हुआ एक बूंद जल/हर क्षण दिखता है
मुझे नींद नहीं आती है।
टूटी खाट पर/हताश पड़े। मेरे बापू की
पथरायी, निर्निमेष/आँखों की गहराई में
कठिनाई से रिसता हुआ/एक बूँद जल।
हर क्षण दीखता है/मुझे नींद नहीं आती।
मेरे खेतों में फट आयी/दरारों के तलान्त पर
उबलता हुआ एक बूंद जल/हर क्षण दिखता है
मुझे नींद नहीं आती।[3]

अकाल के समय पीड़ा में डूबे किन्तु किंचित आशान्वित कृषक की वेदना की गहरी अनुभूति व्यक्त करती इस कविता के लोक को हम सहज ही देख सकते हैं।

निष्कर्ष

उनके साहित्यों में लोक चेतना लोक संस्कृति के आदिम राग काफी मुखरता प्रकट हुई हैं जहाँ तक साहित्य में लोकचेतना का प्रश्न है साहित्य की लोकचेतना उतनी प्राचीन है जितना आदि मानव। उसमें सगात्मक पक्ष उसे मुख्य बनाता है। ग्रामीणों के पर्व, त्योहार, आचार–विचार, रिश्ते, जीवनमूल्य आदि को उन्हीं की बोली में अभिव्यक्ति मिलती है। उनके भाव और भाषा में अपनी मिट्टी की सुगन्ध आती हैं। उसमें मन की जड़ता को दूर करने की अपूर्व क्षमता होती हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी साहित्य का इतिहासः डॉ नागेन्द्र
2. हिंदी साहित्यः सर्वेक्षण एवं समीक्षाः डॉ श्यामनंदन प्रसाद सिंह
3. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहासः डॉ रामप्रसाद सिंह
4. मगही साहित्य का इतिहासः डॉ रामप्रसाद सिंह
5. स्मृति संचयः सं० कृष्ण मोहन प्यारे श्रीमती मृदुला मिश्रा अनामाः प० रामनरेश पाठक
6. क्वार की साँझः प० रामनरेश पाठक
7. प्रक्रिया के एक कविः प० रामनरेश पाठक
8. एक गीत लिखने का मनः प० रामनरेश पाठक
9. मैं अथर्व हूँ: प० रामनरेश पाठक
10. डॉ.संपत्ति अर्याणी स्मृति–संचय / पृष्ठ ...१३६ आलेखःसमकालीन हिन्दी कविता में लोक चेतना/छोटे लाल गुप्ता
11. आलेख :प्रकाशन के गर्भ में पल रही काव्य–कृति "शहर छोड़ते हुए" (सुश्री पुष्पा रूद्र स्मृति संचय पृष्ठ संख्या 250)
12. अपूर्वा (अप्रकाशित) : प० रामनरेश पाठक
13. शहर से गुज़रते हुए (कविता संकलन): प० रामनरेश पाठक
14. अश्वत्थ खड़ा है आज भी (कविता संकलन): प० रामनरेश पाठक
15. यह रेत चन्दन है (कविता संकलन): प० रामनरेश पाठक
16. विविध पत्र पत्रिकाओं में छपे पाठक जी के आलेख विभिन्न साहित्यिक रचनाएँ
17. त्रैमासिक ई–पत्रिका 'अपनी माटी' (ैप्छ 2322–0724 ।चदप डंजप), वर्ष2, अंक–17, जनवरी–मार्च, 2015